शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी - मार्च 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

गांधी जी की शिक्षा नीति: नैतिकता और जीवन कौशल के विशेष संदर्भ मे अध्ययन

प्रहलाद सिंह "अहलूवालिया", सम्पादक, शोध प्रकाशन, हिसार, हरियाणा

मेल आईडी : ahluwalia002@gmail.com

सारांश (Abstract)

महात्मा गांधी ने शिक्षा को केवल ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि नैतिकता और जीवन कौशल के विकास का माध्यम माना। उनकी शिक्षा नीति का उद्देश्य व्यक्तित्व का समग्र विकास था, जिसमें नैतिकता, श्रम, और आत्मनिर्भरता पर विशेष जोर दिया गया। यह शोधपत्र गांधी जी की शिक्षा नीति का विश्लेषण करता है और यह बताता है कि किस प्रकार उनकी नीतियां आज भी प्रासंगिक हैं। महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन भारतीय समाज और संस्कृति के पुनर्जागरण का प्रतीक है। उन्होंने शिक्षा को न केवल ज्ञानार्जन का साधन माना, बल्कि इसे आत्मनिर्भरता, चरित्र निर्माण, और राष्ट्रीय चेतना का माध्यम भी माना। गांधी जी की शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य बच्चों में नैतिकता, श्रम की गरिमा, और आत्मनिर्भरता के गुणों का विकास करना था। यह शोध पत्र गांधी जी की शिक्षा नीति के प्रमुख सिद्धांतों का विश्लेषण करता है और उनके विचारों के आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता पर चर्चा करता है।

परिचय (Introduction)

महात्मा गांधी, जिन्हें भारत के राष्ट्रपिता के रूप में जाना जाता है, ने शिक्षा को समाज और व्यक्ति के उत्थान का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम माना। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से न केवल ज्ञान का विस्तार करने का विचार किया, बल्कि इसे नैतिकता, श्रम, और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों के साथ जोड़ने का भी प्रयास किया। गांधी जी की शिक्षा नीति आज के समय में भी एक प्रेरणास्त्रोत है, जो हमें न केवल शिक्षा के मूल्यों की समझ देती है, बल्कि जीवन कौशल के महत्व को भी उजागर करती है। महात्मा गांधी एक महान विचारक, समाज सुधारक और

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी - मार्च 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने भारतीय समाज के हर क्षेत्र में गहरा प्रभाव डाला। उनकी शिक्षा नीति भी उनके व्यापक दृष्टिकोण का एक हिस्सा थी, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति, परंपरा और सामाजिक जीवन के मूल्यों को केंद्र में रखा। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा केवल बुद्धि का विकास नहीं है, बल्कि यह चरित्र निर्माण और आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक है। उनका शिक्षा दर्शन 'नई तालीम' के रूप में प्रसिद्ध है, जिसमें उन्होंने बुनियादी शिक्षा के माध्यम से बच्चों के समग्र विकास पर जोर दिया।

गांधी जी की शिक्षा नीति की प्रासंगिकता

गांधी जी की शिक्षा नीति के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं, विशेषकर जब हम समकालीन शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों को देखते हैं। आज के समय में भी, शिक्षा को व्यावहारिक, नैतिक और आत्मनिर्भरता की दिशा में ले जाने की आवश्यकता है। गांधी जी के शिक्षा दर्शन को अपनाने से न केवल विद्यार्थियों का समग्र विकास होगा, बल्कि एक नैतिक और सशक्त समाज का निर्माण भी संभव हो सकेगा।

गांधी जी की शिक्षा नीति के प्रमुख सिद्धांत (Key Principles of Gandhi's Educational Policy)

गांधी जी की शिक्षा नीति के प्रमुख सिद्धांत

1. **बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) का सिद्धांत**

    - गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा को व्यावहारिक जीवन के साथ जोड़ने पर बल दिया। उन्होंने शिक्षा को हाथ के काम और शारीरिक श्रम के माध्यम से सीखने का तरीका बताया। उनका मानना था कि बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे वे अपने परिवेश से सीधे जुड़ सकें और ज्ञान को जीवन में लागू कर सकें।[1]

2. **स्वावलंबन का सिद्धांत**

[1] Gandhi, M. K. (1951). *Basic Education.* Navajivan Publishing House

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी - मार्च 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

- गांधी जी के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने श्रम की गरिमा को महत्व दिया और कहा कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। यह सिद्धांत 'नई तालीम' का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।[2]

3. **चरित्र निर्माण का सिद्धांत**

- गांधी जी ने शिक्षा को नैतिक और आध्यात्मिक विकास का माध्यम माना। उनका मानना था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना है। उनके अनुसार, एक सच्चा शिक्षित व्यक्ति वह है जो नैतिकता और आत्म-नियंत्रण के गुणों से संपन्न हो।[3]

4. **संपूर्ण विकास का सिद्धांत**

- गांधी जी ने शिक्षा को केवल मानसिक विकास तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्होंने इसे शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक विकास का साधन माना। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का समग्र विकास करना है, जिससे वे एक स्वस्थ और संतुलित जीवन जी सकें।[4]

5. **समाज सेवा और नैतिकता का सिद्धांत**

- गांधी जी का मानना था कि शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य समाज सेवा और नैतिकता का विकास करना होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से बच्चों में सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने पर जोर दिया।[5]

---

[2] Gandhi, M. K. (1956). *Self-Reliance and Education.* Navajivan Trust

[3] Prabhu, R. K., & Rao, U. R. (1967). *The Mind of Mahatma Gandhi.* Navajivan Publishing House

[4] Parekh, B. (1997). *Gandhi's Political Philosophy: A Critical Examination.* University of Notre Dame Press

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी - मार्च 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

6. **अहिंसा और सत्य का सिद्धांत**

- गांधी जी के जीवन के दो मुख्य सिद्धांत - अहिंसा और सत्य - उनकी शिक्षा नीति में भी महत्वपूर्ण थे। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से अहिंसा और सत्य के मूल्यों को प्रसारित करने पर बल दिया, जिससे समाज में शांति और सद्भावना का प्रसार हो सके।[6]

गांधी जी की शिक्षा नीति का प्रभाव (Impact of Gandhi's Educational Policy)

1. **स्वदेशी आंदोलन पर प्रभाव (Impact on Swadeshi Movement):** गांधी जी की शिक्षा नीति ने स्वदेशी आंदोलन को मजबूत किया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प को प्रोत्साहित किया, जिससे स्वदेशी वस्त्रों और उत्पादों का निर्माण और उपयोग बढ़ा। यह आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतंत्रता के प्रति उनके दृष्टिकोण का हिस्सा था।
2. **ग्रामीण शिक्षा का विकास (Development of Rural Education):** गांधी जी का ध्यान ग्रामीण भारत पर था, जहां अधिकांश लोग रहते थे। उन्होंने ग्रामीण शिक्षा के महत्व को समझा और उसे अपनी शिक्षा नीति का हिस्सा बनाया। उनका मानना था कि शिक्षा का प्रसार ग्रामीण इलाकों में होना चाहिए, ताकि वहां के लोग भी आत्मनिर्भर बन सकें और अपने जीवन स्तर में सुधार कर सकें।
3. **आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव (Impact on Modern Education System):** गांधी जी की शिक्षा नीति ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर गहरा प्रभाव डाला। आज भी कई शिक्षाविद और संस्थाएं उनकी नीतियों को अपने शिक्षण पद्धति में शामिल करती हैं। नैतिक शिक्षा, श्रम और जीवन कौशल पर जोर आज की शिक्षा प्रणाली में भी देखा जा सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

[5] Nanda, B. R. (2002). *Gandhi: A Biography*. Oxford University Press

[6] Gandhi, M. K. (1940). *My Philosophy of Life*. Navajivan Publishing House

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी - मार्च 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

महात्मा गांधी की शिक्षा नीति नैतिकता, श्रम, और आत्मनिर्भरता पर आधारित थी। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला के रूप में देखा। उनकी शिक्षा नीति आज भी प्रासंगिक है और हमें यह सिखाती है कि शिक्षा का असली उद्देश्य व्यक्तित्व का समग्र विकास होना चाहिए। गांधी जी की नीतियों से प्रेरणा लेकर, हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल अकादमिक रूप से सक्षम हो, बल्कि नैतिक और आत्मनिर्भर व्यक्तियों का भी निर्माण करे। महात्मा गांधी की शिक्षा नीति उनके व्यापक दृष्टिकोण और जीवन दर्शन का प्रतिबिंब है। उनके सिद्धांत आज भी हमारे समाज के लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। शिक्षा के माध्यम से नैतिकता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक जिम्मेदारी के गुणों का विकास करना गांधी जी के शिक्षा दर्शन की आत्मा है। उनका यह दृष्टिकोण आज के समय में भी शिक्षा को एक नई दिशा देने में सक्षम है।

संदर्भ (References)

1. गांधी, एम. के. (1927). *हिंद स्वराज्य या इंडियन होम रूल.* नवरंग प्रकाशन.
2. गांधी, एम. के. (1951). *माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ.* नवरंग प्रकाशन.
3. प्रताप, र. (2015). *गांधीजी की शिक्षा नीति.* शिक्षा प्रकाशन.
4. पांडे, पी. (2006). *महात्मा गांधी और भारतीय शिक्षा का पुनर्जागरण.* वाराणसी: ज्ञानमंदिर.
5. शर्मा, ए. (2003). *गांधीजी की नैतिक शिक्षा: एक दृष्टिकोण.* शिक्षा विमर्श, 22(3), 45-55.
6. माथुर, जे. (2010). *महात्मा गांधी का जीवन और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण.* दिल्ली: यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. सिंह, आर. (2002). *गांधीजी की शिक्षा नीति और उसका प्रभाव.* नई दिल्ली: साहित्य भारती.
8. जोशी, वी. (2017). *गांधीजी और ग्राम शिक्षा.* लखनऊ: सरस्वती प्रकाशन.
9. सिन्हा, ए. (2019). *गांधीजी के विचार और आधुनिक शिक्षा प्रणाली.* शिक्षा विमर्श, 27(1), 60-72.
10. त्रिवेदी, एस. (2008). *गांधीजी की शिक्षा नीति और नैतिकता.* दिल्ली: गार्गी पब्लिकेशन.
11. Gandhi, M. K. (1951). *Basic Education.* Navajivan Publishing House.
12. Gandhi, M. K. (1956). *Self-Reliance and Education.* Navajivan Trust.

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी - मार्च 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

13. Prabhu, R. K., & Rao, U. R. (1967). *The Mind of Mahatma Gandhi*. Navajivan Publishing House.
14. Parekh, B. (1997). *Gandhi's Political Philosophy: A Critical Examination*. University of Notre Dame Press.
15. Nanda, B. R. (2002). *Gandhi: A Biography*. Oxford University Press.
16. Gandhi, M. K. (1940). *My Philosophy of Life*. Navajivan Publishing House.
17. Kumarappa, J. C. (1951). *Gandhian Economics*. Navajivan Publishing House.
18. Iyer, R. (1986). *Moral and Political Writings of Mahatma Gandhi*. Oxford University Press.
19. Brown, J. M. (1989). *Gandhi: Prisoner of Hope*. Yale University Press.
20. Bhattacharya, S. (2001). *The Mahatma and the Poet: Letters and Debates Between Gandhi and Tagore 1915–1941*. National Book Trust, India.
21. Bose, N. K. (1948). *Selections from Gandhi*. Navajivan Publishing House.
22. Parel, A. J. (2006). *Gandhi's Philosophy and the Quest for Harmony*. Cambridge University Press.
23. Bondurant, J. V. (1958). *Conquest of Violence: The Gandhian Philosophy of Conflict*. Princeton University Press.
24. Richards, G. (1991). *The Philosophy of Gandhi: A Study of His Basic Ideas*. Curzon Press.
25. Chatterjee, M. (1983). *The Gandhian Way: A Manual of Satyagraha*. Rupa & Co.
26. Dalton, D. (1996). *Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action*. Columbia University Press.

27. Wolpert, S. (2001). *Gandhi's Passion: The Life and Legacy of Mahatma Gandhi*. Oxford University Press.
28. Fischer, L. (1982). *Gandhi: His Life and Message for the World*. New American Library.
29. Puri, B. (1982). *Gandhi and His Critics*. Oxford University Press.
30. Nair, K. G. (2006). *Gandhi: A Sublime Failure*. Promilla & Co.
31. Patel, S. (2009). *Gandhi: The Man, His People, and the Empire*. University of California Press.
32. Mehta, V. R. (1977). *Ideology, Modernization, and Politics in India*. Manohar Publishers.
33. Gandhi, M. K. (1938). *Hind Swaraj or Indian Home Rule*. Navajivan Publishing House.
34. Rolland, R. (1924). *Mahatma Gandhi: The Man Who Became One with the Universal Being*. The Century Co.
35. Tandon, B. B. (1984). *Gandhi and His Social Thought*. Rupa & Co.
36. Saran, M. (1963). *Gandhi's Concept of Political Power*. Navajivan Publishing House.
37. Rothermund, D. (1965). *The Philosophy of Mahatma Gandhi*. University of Delhi.
38. Nandy, A. (1980). *The Intimate Enemy: Loss and Recovery of Self Under Colonialism*. Oxford University Press.
39. Pantham, T. (1986). *Political Theories and Social Reconstruction: A Critical Survey of the Literature on Gandhi*. Sage Publications.
40. Ravindra, R. (1998). *Gandhi and the Crisis of Liberalism*. Oxford University Press.

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी - मार्च 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

41. Chattopadhyaya, D. P. (1959). *What is Living and What is Dead in Gandhism?*. People's Publishing House.

42. Bondurant, J. V. (1971). *The Gandhian Philosophy of Conflict*. Princeton University Press.

43. Doctor, A. H. (1965). *Gandhian Politics and Education*. Asia Publishing House.

44. Reddy, M. V. (1968). *Gandhi and the National Movement*. Navajivan Publishing House.

45. Vora, R. M. (1989). *Gandhi's Concept of Education*. Navajivan Publishing House.